छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा की
दिशा, लक्ष्य और कार्यक्रम...

छत्तीसगढ़ मुक्त मोर्चा, छत्तीसगढ़ के किसान मजदूर बुद्धिजीवी एवं अन्य देशप्रेमी वर्गो का संयुक्त मोर्चा है। इस मोर्चे की अगुवाई औद्योगिक सर्वहारा वर्ग करेगा। छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा, छत्तीसगढ़ के मजदूरों, किसानों छात्रों, नौजवानों और महिलाओं एवं अन्य शोषित पीड़ित जनता का स्वेच्छा से निर्मित संगठन है, जिसका लक्ष्य गुणात्मक रुप से छत्तीसगढ़ की जनता का आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास करना है। छत्तीसगढ़ भूभाग में एक स्वावलंबी अर्थीति के जरिये छत्तीसगढ़ी जनता में स्वाभिमान बोध जागृत करना एवं एक शोषण हीन समाज व्यवस्था की ओर बढ़ना है।

छत्तीसगढ़ की भौगोलिक सीमा मध्यप्रदेश राज्य में 18 से 24 डिग्री अक्षांस और 80 से 84 देशांश में फैली हुई है। इसका क्षेत्रफल 52,650 वर्गमील है। इसकी आबादी लगभग सवा करोड़ है। इसमें सात जिले रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर, बस्तर, सरगुजा, राजनांदगांव एवं रायगढ़ आते हैं। पुराने जमाने में यह क्षेत्र दक्षिण कौशल, रतनपुर राज, दंडकारण्य, गोंडवाना इत्यादि नामों से जाना जाता है।

छत्तीसगढ़ की भाषाएं :-

छत्तीसगढ़ में छत्तीसगढ़ी, हल्बी, गोंड़ी, उरांव, मराठी बोलियां बोली जाती है शहरों में हिन्दी का प्रचलन है।

छत्तीसगढ़ की सम्पदा :-

यह एक खनिज बाहुल्य क्षेत्र है। यहां पर लौह अयस्क, कोयला, चूना, पत्थर, डोलोमाइट, क्वार्टजाइट तांबा, यूरेनियम, टिन, कोरंडम, बाक्साइट, फ्लोरोस्प मैंगनीज एवं अन्य खनिजों के अपार भण्डार हैं। जंगल सम्पदा में सागोन, साल, बीजा महुवा, तेंदू आदि इमारती लकड़ी के साथ साथ वनोपज की भरमार है।

मुख्य नदियां :-

शिवनाथ, महानदी, इन्द्रावती और अरपा आदि में बारह महीने पानी बहता है। छत्तीसगढ़ को धान का कटोरा कहा जाता है। यहां की उर्वर भूमि में धान एवं तिलहन की फसल अच्छी होती है।

उद्योग :-

अंग्रेजों के जमाने में यहां केवल रायगढ़ में पटसन और राजनांदगांव में कपड़ा मिल थी। वर्तमान में रूसी एवं विदेशी सहायता से भिलाई इस्पात संयंत्र, भारत एल्यूमिनियम, सुपर थरमल पावर स्टेशन एवं कई सीमेन्ट कारखाने लगे हैं। इन उद्योगों में मुख्यत: सार्वजनिक पूंजी हैं, जो कि दलाल नौकरशाहों द्वारा संचालित होता है।

सामाजिक एवं आर्थिक स्तर :-

अपार खनिज, वन सम्पदा एवं उर्वर भूमि के बावजूद आज भी छत्तीसगढ़ी जनता बहुत गरीबी में जीवन निर्वाह करती है। लाखों लोगों को दो जून खाना भी नसीब नहीं होता। जनता कुपोषण, शोषण एवं निरक्षरता का शिकार है। जिसके कारण लाखों लोगों को हर साल अपनी मातृ भूमि छोड़कर दूर दराज स्थानों पर रोजी रोटी कमाने जाने के लिए मजबूर होना पड़ता है। इसके भयानक परिणाम स्वरूप आज छत्तीसगढ़ की आधी जनता को छत्तीसगढ़ के बाहर जिन्दगी जीनी पड़ रही है।

छत्तीसगढ़ी कौन ?

1. छत्तीसगढ़ी वह है जो छत्तीसगढ़ के भौगोलिक क्षेत्र में ईमानदारी से मेहनत मजदूरी कर अपना जीवन निर्वाह करता है।
2. जो छत्तीसगढ़ के मुक्ति के लिए समर्पित है।
3. जो सामंती शोषण नहीं करता।

4. जो पूंजीवादी व्यवस्था का अंत चाहता हो।
5. जो छत्तीसगढ़ का जनवादी विकास चाहता हो।
6. जो अंतराष्ट्रीय सर्वहारा से भाई चारा रखता हो।
7. ऐसे व्यक्ति जो परम्परागत रुप से छत्तीसगढ़ के भूभाग का निवासी रहा हो, पर अब कमाने खाने के लिए दूसरे प्रान्त में बसा हो, और जो शोषण न करता हो।
8. दूसरे राष्ट्रों के जनसमुदाय में से वे व्यक्ति जो कि छत्तीसगढ़ के औद्योगिक क्षेत्र में ईमानदारी और मेहनत से अपनी जीविका निर्वाह करते, साथ ही यहां स्थायी रुप से बसने का इरादा रखते हों और छत्तीसगढ़ के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास में श्रद्धा के साथ हाथ बंटाते हों।

छत्तीसगढ़ के दुश्मन :-

सामन्तवादी (मालगुजार, साहूकार) अर्धसामन्तवादी (ठेकेदार एवं दलाल नौकरशाह) प्रवृति के लोग छत्तीसगढ़ी जनता के दुश्मन हैं भले ही वे परम्परागत रुप से छत्तीसगढ़ में पैदा हुए हों और छत्तीसगढ़ी बोलते हों।

छत्तीसगढ़ के पिछड़ने के कारण :-

1. औपनिवेशवाद ताकतों द्वारा थोपी गई आर्थिक ढांचा औद्योगिक नीति एवं अंधाधुंध मशीनीकरण।
2. सामंती ग्रामीण अनीति एवं अर्धसामन्ती ठेकेदारी पद्धति।
3. भूमि से कम उत्पादकता।

नये छत्तीसगढ़ की मांग आज एक लोकप्रिय जनवादी मांग है :-

जनता छत्तीसगढ़ का विकास चाहती है। छोटे राज्य मात्र के बन जाने से विकास होगा, यह आज की राजनैतिक परिस्थितियों में निश्चित नहीं है। जब जनता का व्यापक हिस्सा छत्तीसगढ़ राज्य की मांग करे तो यह एक जनवादी मांग बन जाती है। इस मांग को पूरा होना चाहिये। आज यहां का पूंजीपति वर्ग भी एक पृथक छत्तीसगढ़ राज्य की मांग कर रहा है। किसानों द्वारा भी एक नये छत्तीसगढ़ का मांग जोर पकड़ रही है। इसलिए मजदूर वर्ग का कर्तव्य है कि वो इस सवाल का लेकर गम्भीर रुप से सक्रिय हो। जब तक यह आन्दोलन जनता को आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मुक्ति की एक निश्चित दिशा में संचालित नहीं होते तब तक ये उग्रजातिवाद या पृथकवाद के गड्ढे में गिरकर बहुत नुकसान कर सकते हैं। क्षेत्र के विकास कार्य में क्षेत्रीय जनता की हिस्सेदारी ही विकास की गारंटी है।

ऐसी परिस्थिति में अपने कार्यो का विश्लेषण कर, सीखते हुये हम मुक्ति संघर्ष में आगे बढ़ेंगे।

छत्तीसगढ़ी जनता की व्यापकता एकता ही उसकी मुक्ति की गारंटी है। इस एकता का आधार केवल संघर्ष ही है न कि पर्ची काट कर सदस्यता बढ़ाना।

छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा का कार्यक्रम :-

1. वर्तमान अकाल के परिणाम स्वरुप उत्पन्न परिस्थितियों से पलायन करने के बजाय छत्तीसगढ़ के लोग जनसमूह में ब्लाक स्तर पर एक दिन एक साथ जमा हो और तब तक वापस न जाये जब तक सरकार की ओर से उन्हे काम की व्यवहारिक गारंटी नहीं दी जाती।

2. उद्योगपतियों को बाध्य किया जाये कि वे अपने अपने उद्योग से होने वाले ला को एक निश्चित हिस्सा संबंधित जिले में कृषि की सिंचाई एवं पेय जल उपलब् कराने पर खर्च करें। इंकार करने पर उद्योग का घेराबंदी किया जावे।

3. ठेकेदारी मजदूरों, असंगठित मजदूरों, बीड़ी मजदूरों, पत्थर तोड़ने का जंगल कार्यरत मजदूरों को संगठित मजदूरों को दर्जा देने का आंदोलन पूरे छत्तीस में एक सा बनाया जाये।

4. साम्प्रदायिकता, जातिवाद एवं पृथकतावाद के खिलाफ में हर स्तर का आंदोल किया जावे।

5. सामाजिक बुराइयों, शराबखोरी एवं महिलाओं का निर्यात जुआ सट्टा इत्यादि खिलाफ, हर स्तर पर आंदोलन किया जावे।

6. छत्तीसगढ़ी भाषा में गांव के स्तर पर शिक्षा का काम शुरु किया जाये एवं गोंड हल्बी व छत्तीसगढ़ के अन्य बोलियों के रक्षा व विकास के लिए कदम उठाये जायें।

7. जंगल के उत्पादन में लाख, चिरौंजी, साल, बीज कुसुम, करंज, कोसा आदि उत्पादन का उचित मल्य देने के लिए सरकार एवं व्यवसायियों को बाध्य किया जावे।

8. जंगल के उत्पादन एवं कृषि आधारित उद्योग लगाने के लिए सरकार एवं उद्योगपतियों को आन्दोलन के जरिये बाध्य किया जावे।

9. शराब की जायज एवं नाजायज भट्टियों को समाप्त किया जावे।

10. आदिवासी क्षेत्र में वन विभाग के कर्मचारी एवं अधिकारियों द्वारा शोषण एवं अत्याचार का सक्रिय रुप से विरोध किया जावे।

11. क्योंकि साहूकार एवं ठेकेदारों द्वारा गरीब किसानों की जमीनों को हड़पा गया है, इसलिये इन वर्गों की एक इंच जमीन भी रखने का नैतिक अधिकार नहीं है। इन जमीनों को क्षेत्र के गरीब मजदूर किसान अपने कब्जे में लें।
12. छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा की ओर से ग्रामीण विकास में रचनात्मक प्रयोग किये जायें।
13. कोरंडम एवं टिन की तस्करी और निर्यात पर तुरन्त रोक लगाई जाये।
14. तेन्दू पत्ता की तुड़ाई चुनाई करने वाले मजदूरों को न्यूनतम वेतन दिलाने के लिए संगठित किया जाये।
15. छत्तीसगढ़ क्षेत्र में वैकल्पिक कृषि जैसे रुई, गन्ना की पैदावार बढ़ाई जाये।
16. मशीनीकरण का विरोध कर श्रम आधारित उद्योगों की स्थापना की जाये।
17. ''नवा अंजोर'' सांस्कृतिक मंडली की गांव गांव में शाखा खोली जाये, जिससे परम्परागत संस्कृति की रक्षा और विकास हो सके और बंबई फिल्मी संस्कृति पर अंकुश लगे।
18. हर गांव में पीने के पानी का प्रबंध हेतु सरकार पर दबाव डाला जाये।
19. टी.बी., कुष्ठ रोग के बारे में सही आंकड़े संकलित किये जायें एवं इन रोगियों को सरकार के द्वारा उपचार हेतु संगठित किया जाये।
20. इन तमाम रचनात्मक कार्यों को अमल में लाने के लिए मुक्ति सेना का गठन कया जाये।

चल मजूदर, चल किसान
देश के हो महान

तोर संग संग मा
चलही बनिहार

मिल जुल के सबो झन
शोषण का ट एबो

छ त्तीसगढ़ दाई के
हावे रे गोहार...!

प्रकाशक : छ त्तीसगढ़ माइन्स श्रमिक संघ, दल्लीराजहरा

मुद्रक : विजय प्रिंटिंग प्रेस, बालोद

सहयोग राशि : 1/- रु.